

# विमानयानं रचयाम (हम वायुयान बनायें)

प्रस्तोता : रवि उपाध्यायः

-प्र.स्ना.शि. (संस्कृत/हिन्दी)

परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-१, तारापुर

# वायुयान का निर्माण करते बालक



# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

राघव! माधव! सीते! ललिते!  
विमानयानं रचयाम ।  
नीले गगने विपुले विमले  
वायुविहारं करवाम ॥१॥

## सरलार्थ

- हे राघव!, हे माधव!, हे सीते!,  
और हे ललिते! हम विमान  
बनाएँ | विस्तृत एवं नीले  
आकाश में वायुयात्रा करें |

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

उन्नतवृक्षं तुङ्गं भवनं  
क्रान्त्वाकाशं खलु याम ।  
कृत्वा हिमवन्तं सोपानं  
चन्दिरलोकं प्रविशाम ॥ २ ॥

## सरलार्थ

- ऊँचे वृक्ष तथा ऊँचे महल को पार करके हम आकाश में जायें । बर्फ से ढके हुए ऊँचे पर्वतों को सीढ़ी बनाकर हम चंद्रलोक में प्रवेश करें ।

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

शुक्रश्चन्द्रः सूर्यो गुरुरिति  
ग्रहान् हि सर्वान् गणयाम ।  
विविधाः सुन्दरताराश्चित्वा  
मौक्तिकहारं रचयाम ॥ ३ ॥

## सरलार्थ

- वहाँ पर हम सब शुक्र, चन्द्र, सूर्य और गुरु आदि सभी ग्रहों को गिनें एवं अनेक प्रकार के तारों को चुनकर मणियों (मोतियों) का हार बनायें ।

# मूलपाठ एवं सरलार्थ

## मूलपाठ

अम्बुदमालाम् अम्बरभूषाम्  
आदायैव हि प्रतियाम ।  
दुःखित-पीडित-कृषकजनानां  
गृहेषु हर्षं जनयाम ॥ ४ ॥

## सरलार्थ

- “बादलों की माला” जो आकाश की शोभा है; हम उसको लेकर ही लौटें और दुःखी एवं पीड़ित किसानों के घरों में खुशहाली लायें ।